

=====

AVYAKT MURLI

25 / 03 / 71

=====

25-03-71 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

न्यारे और विश्व के प्यारे बनने की विधि

सभी अपने अलौकिक और पारलौकिक नशे और निशाने में सदैव रहते हो? अलौकिक नशा और निशाना और पारलौकिक नशा और निशाना, दोनों को जानते हो? दोनों में फर्क है वा एक है? अलौकिक नशा और निशाना हुआ इस ईश्वरीय जन्म का और पारलौकिक नशा और निशाना हुआ भविष्य जन्म का। तो ईश्वरीय जन्म का नशा और निशाना याद रहता है? साथ-साथ पारलौकिक अर्थात् भविष्य का नशा और निशाना याद रहता है? अगर दोनों ही हर समय रहें तो क्या बन जायेंगे? अलौकिक नशे और निशाने से बनेंगे न्यारे और पारलौकिक नशे और निशाने से बनेंगे विश्व के प्यारे। तो दोनों ही नशे और निशाने से न्यारे और प्यारे बन जायेंगे। समझा?

अभी सभी से न्यारा बनना है। अपनी देह से ही जब न्यारे बनना है, तो सभी बातों में भी न्यारे हो जायेंगे। अब पुरुषार्थ कर रहे हो न्यारे बनने

का। न्यारे बनने से फिर स्वतः ही सभी के प्यारे बन जाते हो। प्यारे बनने का पुरुषार्थ नहीं होता है, पुरुषार्थ न्यारे बनने का होता है। अगर सबका प्यारा बनना है तो पुरुषार्थ क्या करना है? सर्व से न्यारे बनने का। अपनी देह से न्यारे तो बनते ही हो लेकिन आत्मा में जो पुराने संस्कार हैं उन्हीं से भी न्यारे बनो। प्यारे बनने के पुरुषार्थ से प्यारे बनेंगे तो रिजल्ट क्या होगी? और ही प्यारे बनने की बजाय बापदादा के दिल रूपी तख्त से दूर हो जायेंगे। इसलिए यह पुरुषार्थ नहीं करना है। कोई भी न्यारी चीज़ प्यारी ज़रूर होती है। इस संगठन में अगर कोई न्यारी चीज़ दिखाई दे तो सभी का लगाव और सभी का प्यार उस तरफ चला जायेगा। तो आप भी न्यारे बनो। सहज पुरुषार्थ है ना। न्यारे नहीं बन पाते हैं, इसका कारण क्या है? आजकल का लगाव सारी दुनिया में किस कारण से होता है? (अट्रैक्शन पर) अट्रैक्शन भी स्वार्थ से है। इस समय का लगाव स्नेह से नहीं लेकिन स्वार्थ से है। तो स्वार्थ के कारण लगाव और लगाव के कारण न्यारे नहीं बन सकते। तो उसके लिये क्या करना पड़े? स्वार्थ का अर्थ क्या है? स्वार्थ अर्थात् स्व के रथ को स्वाहा करो। यह जो रथ अर्थात् देहअभिमान, देह की स्मृति, देह का लगाव लगा हुआ है। इस स्वार्थ को कैसे खत्म करेंगे? उसका सहज पुरुषार्थ, 'स्वार्थ' शब्द के अर्थ को समझो। स्वार्थ गया तो न्यारे बन ही जायेंगे। सिर्फ एक अर्थ को जानना है, जानकर अर्थ-स्वरूप बनना है। तो एक ही शब्द का अर्थ जानने से सदा एक के और एकरस बन जायेंगे। अच्छा।

आज टीचर्स के उद्घाटन का दिन है। सम्पूर्ण आहुतिडालने की सामर्थ्य है? यह ग्रुप इन्चार्ज टीचर्स का है ना। अभी हैं वा बनने वाली हैं? मुख्य धारणा यही है वि सदैव अपनी सम्पूर्ण स्थिति का वा अपने सम्पूर्ण स्वरूप का आह्वान करते रहो। जैसे कोई का आह्वान किया जाता है तो बुद्धि में वही स्मृति में रहता है ना। इस रीति से सदैव अपने सम्पूर्ण स्वरूप का आह्वान करते रहेंगे तो सदैव वही स्मृति में रहेगा। और इसी स्मृति में रहने के कारण रिजल्ट क्या होगी? यह जो आवागमन का चक्र चलता रहता है; आवागमन का चक्र कौनसा? कभी ऊंच स्थिति में ठहरते हो, कभी नीचे आ जाते हो। यह जो ऊपर-नीचे आने- जाने का आवागमन का चक्र है इस चक्र से मुक्त हो जायेंगे। वह लोग जन्म- मरण के चक्र से छूटने चाहते हैं और आप लोग यह जो स्मृति और विस्मृति का आवागमन का चक्र है, इससे मुक्त होने का पुरुषार्थ करते हो। तो सदैव अपने सम्पूर्ण स्वरूप का आह्वान करने से आवागमन से छूट जायेंगे अर्थात् इन व्यर्थ बातों से किनारा करने से सदैव चमकता हुआ लक्की सितारा बन जायेंगे। इन्चार्ज टीचर बनने के लिए पहले अपनी आत्मा की बैटरी चार्ज करो। जितनी जिसकी बैटरी चार्ज है उतना ही अच्छा इन्चार्ज टीचर बन सकती है। समझा? जब यह याद आये कि मैं इन्चार्ज हूँ तो पहले यह अपने से पूछो कि मेरी बैटरी चार्ज हुई है अगर बैटरी चार्ज कम होगी तो इन्चार्ज टीचर में भी उतनी कमी दिखाई देगी। तो अब क्या करना है? अच्छी तरह से बैटरी चार्ज करके फिर इन्चार्ज बनकर जाना। ऐसे ही सिर्फ इन्चार्ज नहीं

बन करजाना। अगर बैटरी चार्ज के बिना इन्चार्ज बनेंगी तो क्या होगा? चार्ज अक्षर के दो-तीन मतलब होते हैं। एक होता है बैटरी चार्ज, दूसरा चार्ज अर्थात् इयूटी भी होता है और तीसरा चार्ज अर्थात् दोष को कहते हैं। कोई पर चार्ज लगाते हैं ना। तो इन्चार्ज होने से अगर बैटरी चार्ज है तो फिर इन्चार्ज यथार्थ रीति बनते हैं। अगर बैटरी चार्ज नहीं यथार्थ रूप नहीं तो फिर भिन्न-भिन्न चार्जेज लग जाते हैं। तो अब समझा, कैसे इन्चार्ज बनेंगे? धर्मराजपुरी में पहले चार्ज लगाकर फिर सज़ा देंगे। तो अगर बैटरी चार्ज नहीं होगी तो चार्जेज लगेंगी। अभी ऐसे बनकर जाना जो सभी की निगाहों में यह गुप आ जाये। सभी अनुभव करें कि बड़े तो बड़े लेकिन छोटे सुभान अल्लाह। ऐसा लक्ष्य रख, भट्ठी से ऐसे ही लक्षण धारण करके जाना। ऐसा कोमल होना है जो अपने को जहां मोड़ने चाहो वहाँ मोड़ सकते हो। कोमल चीज़ को जहाँ मोड़ने चाहते हैं वहाँ मोड़ सकते हैं। लेकिन सख्त को कोई मोड़ नहीं सकेंगे। कोमल बनना है लेकिन किस में? संस्कार मोड़ने में कोमल बनो। लेकिन कोमल दिल से बचकर रहना। यह लक्ष्य और लक्षण धारण करके जाना है। इस स्नेही और सहयोगी बनने वाले गुप के लिये सलोगन है - 'अधिकारी बनेंगे और अधीनता को मिटायेंगे'। कभी अधीन नहीं बनना - चाहे संकल्पों के, चाहे माया के। और भी कोई रूपों के अधीन नहीं बनना। इस शरीर के भी अधिकारी बनकर चलना और माया से भी अधिकारी बन उसको अपने अधीन करना है। सम्बन्ध की अधीनता में भी नहीं आना है। चाहे लौकिक, चाहे ईश्वरीय

सम्बन्ध की भी अधीनता में न आना। सदा अधिकारी बनना है। यह सलोगन सदैव याद रखना। ऐसा बनकर के ही निकलना। जैसे कहावत है ना कि मान सरोवर में नहाने से परियां बन जाते थे। इस गुप को भी भट्ठी रूपी ज्ञानमानसरोवर में नहाकर फरिश्ता बनकर निकलना है।

जब फरिश्ता बन गया तो फरिश्ते अर्थात् प्रकाशमय काया। इस देह की स्मृति से भी परे। उनके पांच अर्थात् बुद्धि इस पांच तत्व के आकर्षण से ऊंची अर्थात् परे होती है। ऐसे फरिश्तों को माया व कोई भी मायावी टच नहीं कर सकेंगे। तो ऐसे बनकर जाना जो न कोई मायावी मनुष्य, न माया टच कर सके। कुमारियों की महिमा बहुत गाई हुई है। लेकिन कौनसी कुमारी? ब्रह्माकुमारियों की महिमा गाई हुई है। ब्रह्माकुमारी अर्थात् ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष करने वाली कुमारी। जो टीचर्स बनती हैं उन्हीं को सिर्फ प्वाइन्ट बुद्धि में नहीं रखनी है वा वर्णन करनी है लेकिन प्वाइन्ट रूप बनकर प्वाइन्ट वर्णन करनी है। अगर स्वयं प्वाइन्ट स्थिति में स्थित नहीं होंगे तो प्वाइन्ट का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसलिए प्वाइन्ट इकट्ठी करने के साथ अपना प्वाइन्ट रूप भी याद करते जाना। जब कापियां भरती हो तो कापी को देख यह सब चेक करना कि साकार ब्रह्मा बाप के चरित्रों की कापी बनी हूँ? कापी जो की जाती है वह तो हूबहू होगी ना। ऐसे बाप समान दिखाई पड़ो। सुनाया था ना कि जितनी समानता होगी उतनी सामना करने की शक्ति होगी। समानता लाने से सामना करने की शक्ति स्वतः आ जायेगी। अच्छा।

यह ग्रुप कम नहीं है। इतना बड़ा शक्तिदल जब कोने-कोने में सर्विस पर फैल जायेगा तो क्या होगा? आवाज़ बुलन्द हो जायेगा - ब्रह्माकुमारियों की जय। अभी तो गालियां देते हैं ना। यहां ही आप लोगों के सामने महिमा के पुष्प चढ़ायेंगे। इसलिए कहा कि ऐसे बनकर के जाना जो देखते ही सभी के मुख से यह आवाज़ बुलन्द हो निकले। इस ग्रुप को यह प्रैक्टिकल पेपर देना है। चारों ओर बापदादा और मददगार बच्चों की जय-जयकार हो जाये। ऐसी शक्ति है? एक के संग में रहने से संगदोष से छूट जायेंगे। सदैव चेविंग करो कि बुद्धि का संग किसके साथ है? एक के साथ है? अगर एक का संग है तो अनेक संगदोष से छूट जायेंगे। संगदोष कई प्रकार के दोष पैदा कर देते हैं। इसलिए इसका बहुत ध्यान रखना। एक बाप दूसरे हम, तीसरा न कोई। जब ऐसी स्थिति होगी तो फिर सदैव आप लोगों के मस्तक से तीसरे नेत्र का साक्षात्कार होगा। यहाँ का जो यादगार है उसमें योग की निशानी क्या दिखाई है? तीसरा नेत्र। अगर बुद्धि में तीसरा कोई आ गया तो फिर तीसरा नेत्र बन्दी जायेगा। इसलिए सदैव तीसरा नेत्र खुला रहे, इसके लिए यह याद रखना कि तीसरा न कोई। अच्छा।

QUIZ QUESTIONS

प्रश्न 1 :- न्यारे और विश्व के प्यारे बनने के लिए बापदादा ने क्या समझानी दी है?

प्रश्न 2 :- स्वार्थ के सन्दर्भ में बापदादा के महावाक्य क्या है?

प्रश्न 3 :- बापदादा इन्चार्ज टीचर्स को आवागमन के सम्बन्ध पर क्या समझाते हैं?

प्रश्न 4 :- 'इन्चार्ज टीचर बनने के लिए पहले अपनी आत्मा की बैटरी चार्ज करो।' इसके लिये बापदादा के महावाक्य क्या है?

प्रश्न 5 :- बापदादा टीचर्स को क्या सावधानी देते हैं?

FILL IN THE BLANKS:-

(अधिकारी, बड़ा, लगाव, लौकिक, चीज, सख्त, स्वार्थ, सर्विस, सम्बन्ध, माया, मोड़, अधीन, बुलन्द, दुनिया, बनना)

1 कोमल ____ को जहाँ मोड़ने चाहते हैं वहाँ मोड़ सकते हैं। लेकिन ____ को कोई ____ नहीं सकेंगे।

2 इस शरीर के भी अधिकारी बनकर चलना और ____ से भी ____ बन उसको अपने ____ करना है।

3 आजकल का _____ सारी _____ में किस कारण से होता है? (अट्रैक्शन पर) अट्रैक्शन भी _____ से है।

4 सम्बन्ध की अधीनता में भी नहीं आना है। चाहे _____, चाहे ईश्वरीय _____ की भी अधीनता में न आना। सदा अधिकारी _____ है।

5 इतना _____ शक्तिदल जब कोने-कोने में _____ पर फैल जायेगा तो क्या होगा? आवाज़ _____ हो जायेगा - ब्रह्माकुमारियों की जय।

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:-

1 :- जैसे कहावत है ना कि मान सरोवर में नहाने से परियां बन जाते थे।

2 :- अभी तो गालियां देते हैं ना। यहां ही आप लोगों के सामने महिमा के पुष्प चढ़ायेंगे।

3 :- अगर बुद्धि में तीसरा कोई आ गया तो फिर तीसरा नेत्र बन्दी जायेगा। इसलिए सदैव तीसरा नेत्र खुला रहे, इसके लिए यह याद रखना कि तीसरा न कोई।

4 :- न्यारे बनने का पुरुषार्थ नहीं होता है, पुरुषार्थ प्यारे बनने का होता है।

5 :- इस गुप को भी भट्ठी रूपी ज्ञानमानसरोवर में नहाकर ब्राह्मण बनकर निकलना है।

QUIZ ANSWERS

प्रश्न 1 :- न्यारे और विश्व के प्यारे बनने के लिए बापदादा ने क्या समझानी दी है?

उत्तर 1 :- न्यारे और विश्व के प्यारे बनने के लिए बापदादा समझाते हैं कि:-

.. ① अलौकिक नशा और निशाना हुआ इस ईश्वरीय जन्म का और पारलौकिक नशा और निशाना हुआ भविष्य जन्म का।

.. ② अलौकिक नशे और निशाने से बनेंगे न्यारे और पारलौकिक नशे और निशाने से बनेंगे विश्व के प्यारे।

.. ③ अपनी देह से न्यारे तो बनते ही हो लेकिन आत्मा में जो पुराने संस्कार हैं उन्हीं से भी न्यारे बनो।

.. ④ प्यारे बनने के पुरुषार्थ से प्यारे बनेंगे तो रिजल्ट क्या होगी? और ही प्यारे बनने की बजाय बापदादा के दिल रूपी तख्त से दूर हो जायेंगे।

.. ⑤ इसलिए यह पुरुषार्थ नहीं करना है। कोई भी न्यारी चीज़ प्यारी ज़रूर होती है।

.. ⑥ इस संगठन में अगर कोई न्यारी चीज़ दिखाई दे तो सभी का लगाव और सभी का प्यार उस तरफ चला जायेगा। तो आप भी न्यारे बनो। सहज पुरुषार्थ है ना।

प्रश्न 2 :- स्वार्थ के सन्दर्भ में बापदादा के महावाक्य क्या है?

उत्तर 2 :- स्वार्थ के सन्दर्भ में बापदादा कहते हैं कि :-

.. ① स्वार्थ अर्थात् स्व के रथ को स्वाहा करो। यह जो रथ अर्थात् देह-अभिमान, देह की स्मृति, देह का लगाव लगा हुआ है।

.. ② इस समय का लगाव स्नेह से नहीं लेकिन स्वार्थ से है। तो स्वार्थ के कारण लगाव और लगाव के कारण न्यारे नहीं बन सकते।

.. ③ तो उसके लिये सहज पुरुषार्थ, 'स्वार्थ' शब्द के अर्थ को समझना हैं। स्वार्थ गया तो न्यारे बन ही जायेंगे।

..④ सिर्फ एक अर्थ को जानना है, जानकर अर्थ-स्वरूप बनना है। तो एक ही शब्द का अर्थ जानने से सदा एक के और एकरस बन जायेंगे।

प्रश्न 3 :- बापदादा इन्चार्ज टीचर्स को आवागमन के सम्बन्ध पर क्या समझाते हैं?

उत्तर 3 :- बापदादा इन्चार्ज टीचर्स को आवागमन के सम्बन्ध पर समझाते हैं कि :-

..① मुख्य धारणा यही है कि सदैव अपनी सम्पूर्ण स्थिति का वा अपने सम्पूर्ण स्वरूप का आह्वान करते रहो।

..② जैसे कोई का आह्वान किया जाता है तो बुद्धि में वही स्मृति में रहता है ना। इस रीति से सदैव अपने सम्पूर्ण स्वरूप का आह्वान करते रहेंगे तो सदैव वही स्मृति में रहेगा।

..③ और इसी स्मृति में रहने के कारण यह जो आवागमन का चक्र चलता रहता है; माना कभी ऊंच स्थिति में ठहरते हो, कभी नीचे आ जाते हो। यह जो ऊपर-नीचे आने- जाने का आवागमन का चक्र है इस चक्र से मुक्त हो जायेंगे।

..④ वह लोग जन्म-मरण के चक्र से छूटने चाहते हैं और आप लोग यह जो स्मृति और विस्मृति का आवागमन का चक्र है इससे मुक्त होने का पुरुषार्थ करते हो।

.. ⑤ तो सदैव अपने सम्पूर्ण स्वरूप का आह्वान करने से आवागमन से छूट जायेंगे अर्थात् इन व्यर्थ बातों से किनाराकरने से सदैव चमकता हुआ लक्की सितारा बन जायेंगे।

प्रश्न 4 :- 'इन्चार्ज टीचर बनने के लिए पहले अपनी आत्मा की बैटरी चार्ज करो।' इसके लिये बापदादा के महावाक्य क्या है?

उत्तर 4 :- बापदादा कहते हैं कि:-

.. ① इन्चार्ज टीचर बनने के लिए पहले अपनी आत्मा की बैटरी चार्ज करो। जितनी जिसकी बैटरी चार्ज है उतना ही अच्छा इन्चार्ज टीचर बन सकती है।

.. ② अगर बैटरी चार्ज कम होगी तो इन्चार्ज टीचर में भी उतनी कमी दिखाई देगी। अगर बैटरी चार्ज के बिना इन्चार्ज बनेंगी तो क्या होगा?

.. ③ चार्ज अक्षर के दो-तीन मतलब होते हैं। एक होता है बैटरी चार्ज, दूसरा चार्ज अर्थात् ड्यूटी भी होता है और तीसरा चार्ज अर्थात् दोष को कहते हैं। कोई पर चार्ज लगाते हैं ना।

.. ④ अगर बैटरी चार्ज है तो फिर इन्चार्ज यथार्थ रीति बनते हैं। अगर बैटरी चार्ज नहीं, यथार्थ रूप नहीं तो फिर भिन्न-भिन्न चार्जेज़ लग जाते हैं।

.. ⑤ तो अब समझा, कैसे इन्चार्ज बनेंगे? धर्मराजपुरी में पहले चार्ज लगाकर फिर सज़ा देंगे।

.. ⑥ तो अगर बैटरी चार्ज नहीं होगी तो चार्ज लगेगी। अभी ऐसे बनकर जाना जो सभी की निगाहों में यह गुप आ जाये। सभी अनुभव करें कि बड़े तो बड़े लेकिन छोटे सुभान अल्लाह।

.. ⑦ ऐसा लक्ष्य रख, भट्ठी से ऐसे ही लक्षण धारण करके जाना। ऐसा कोमल होना है जो अपने जहां मोड़ने चाहो वहाँ मोड़ सकते हो।

.. ⑧ संस्कार मोड़ने में कोमल बनो। लेकिन कोमल दिल से बचकर रहना। यह लक्ष्य और लक्षण धारण करके जाना है।

.. ⑨ इस स्नेही और सहयोगी बनने वाले गुप के लिये सलोगन है - 'अधिकारी बनेंगे और अधीनता को मिटायेंगे'।

प्रश्न 5 :- बापदादा टीचर्स को क्या सावधानी देते हैं?

उत्तर 5 :- बापदादा टीचर्स को सावधानी देते हैं कि :-

.. ① जो टीचर्स बनती हैं उन्हीं को सिर्फ प्वाइन्ट बुद्धि में नहीं रखनी है वा वर्णन करनी है लेकिन प्वाइन्ट रूप बनकर प्वाइन्ट वर्णन करनी है।

.. ② अगर स्वयं प्वाइन्ट स्थिति में स्थित नहीं होंगे तो प्वाइन्ट का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसलिए प्वाइन्ट इकट्ठी करने के साथ अपना प्वाइन्ट रूप भी याद करते जाना।

.. ③ जब कापियां भरती हो तो कापी को देख यह सब चेक करना कि साकार ब्रह्मा बाप के चरित्रों की कापी बनी हूँ?

.. ④ कापी जो की जाती है वह तो हूबहू होगी ना। ऐसे बाप समान दिखाई पड़े। सुनाया था ना कि जितनी समानता होगी उतनी सामना करने की शक्ति होगी।

.. ⑤ फरिश्ते अर्थात् प्रकाशमय काया। इस देह की स्मृति से भी परे। उनके पांच अर्थात् बुद्धि इस पांच तत्व के आकर्षण से ऊंची अर्थात् परे होती है।

.. ⑥ ऐसे फरिश्तों को माया व कोई भी मायावी टच नहीं कर सकेंगे। तो ऐसे बनकर जाना जो न कोई मायावी मनुष्य, न माया टच कर सके।

.. ⑦ कुमारियों की महिमा बहुत गाई हुई है। ब्रह्माकुमारी अर्थात् ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष करने वाली कुमारी।

.. ⑧ सदैव चेकिंग करो कि बुद्धि का संग किसके साथ है? अगर एक का संग है तो अनेक संगदोष से छूट जायेंगे।

.. 9 संगदोष कई प्रकार के दोष पैदा कर देते हैं। इसलिए इसका बहुत ध्यान रखना। एक बाप दूसरे हमतीसरा न कोई।

.. 10 जब ऐसी स्थिति होगी तो फिर सदैव आप लोगों के मस्तक से तीसरे नेत्र का साक्षात्कार होगा।

FILL IN THE BLANKS:-

(अधिकारी, बड़ा, लगाव, लौकिक, चीज, सख्त, स्वार्थ, सर्विस, सम्बन्ध, माया, मोड़, अधीन, बुलन्द, दुनिया, बनना)

1 कोमल _____ को जहाँ मोड़ने चाहते हैं वहाँ मोड़ सकते हैं। लेकिन _____ को कोई _____ नहीं सकेंगे।

.. चीज / सख्त / मोड़

2 इस शरीर के भी अधिकारी बनकर चलना और _____ से भी _____ बन उसको अपने _____ करना है।

.. अधिकारी / माया / अधीन

3 आजकल का _____ सारी _____ में किस कारण से होता है?
(अट्रेक्शन पर) अट्रेक्शन भी _____ से है।

.. लगाव / दुनिया / स्वार्थ

4 सम्बन्ध की अधीनता में भी नहीं आना है। चाहे _____, चाहे ईश्वरीय
_____ की भी अधीनता में न आना। सदा अधिकारी _____ है।

.. लौकिक / सम्बन्ध / बनना

5 इतना _____ शक्तिदल जब कोने-कोने में _____ पर फैल जायेगा तो
क्या होगा? आवाज़ _____ हो जायेगा - ब्रह्माकुमारियों की जय।

.. बड़ा / सर्विस / बुलन्द

सही गलत वाक्यों को चिन्हित करे:- [✓] [✗]

1 :- जैसे कहावत है ना कि मान सरोवर में नहाने से परियां बन जाते थे। [✓]

2 :- अभी तो गालियां देते हैं ना। यहां ही आप लोगों के सामने महिमा के पुष्प
चढ़ायेंगे। [✓]

3 :- अगर बुद्धि में तीसरा कोई आ गया तो फिर तीसरा नेत्र बन्दी जायेगा।
इसलिए सदैव तीसरा नेत्र खुला रहे, इसके लिए यह याद रखना कि तीसरा न कोई।
【✓】

4 :- न्यारे बनने का पुरुषार्थ नहीं होता है, पुरुषार्थ प्यारे बनने का होता है।
【✗】

.. प्यारे बनने का पुरुषार्थ नहीं होता है, पुरुषार्थ न्यारे बनने का होता है।

5 :- इस ग्रुप को भी भट्ठी रूपी ज्ञानमानसरोवर में नहाकर ब्राह्मण
बनकर निकलना है। 【✗】

.. इस ग्रुप को भी भट्ठी रूपी ज्ञानमानसरोवर में नहाकर फरिश्ता बनकर
निकलना है।